रामेश्वर वाढेकर 'संघर्षशील'

संघर्ष

रात्रि का समय था। घबराहट बढ़ रही थी धूपकाले के वजह से। पत्रेका घर का था। पंखा भी नहीं था। परिणाम स्वरूप गर्मी ज़्यादा महसूस हो रही थी। रात्रि के दो बज चुके थे, तब भी नींद नहीं आ रही थी। उतने में धीरे से आवाज आई, "प्रेरणा,नींद नहीं आ रही है शायद। इस घर में नींद कैसे आएगी ? घर में नहीं,पत्रे के गोदाम में। मैं आपकी देखभाल अच्छीक्ष तरह नहीं कर पाया,अंत तक। मैं अपयशी पति शाबित हुआ हूं खुद के नज़र में । मुझे माफ़ करना।" इतनी बातें कहकर करवट बदल ली। निरंतर करवट बदलते रहे,किंतु सुबह तक सुकून की नींद नहीं आई।

"सुखदेव,आप ऐसी नकारात्मक बातें क्यों कह रहे हो ? मैं आपके साथ खुश हूं। और ज़िंदगी भर खुश रहूंगी। आपने कठिन परिस्थिति में मार्ग निकाला, संघर्ष करके। दोनों बच्चे को पढ़ाया। बेटी की धूमधाम से शादी की। आप सफल पति है।और अंत तक रहेंगे।"

"आपने अब तक कहां मुझे जीतने दिया है बोलने के स्पर्धा में। तो अब जीतने देंगी। कभी भी जीतने नहीं देगी आप। ख़ैर,यश बेटे का फोन आया था क्या दो-तीन दिनों में ?"

"आया था। पढ़ाई अच्छी चल रही है इतना कहा बस्स उसने।"

"मुझे उसके संदर्भ में एक चिंता निरंतर सताती है। मैं परेशान रहता हूं उसी सोच में।"

"कौन सी चिंता ?"

"उसे जीवनसाथी अच्छी नहीं मिली तो ? उसका क्या होगा ? वह शांत और भोला है। तुझ जैसी खुबसूरत विचार की लड़की उसे जीवनसाथी मिले,यही मेरी इच्छा है।"

"मिल जाएगी। चिंता करना अब छोड़ दो। यश बेटे की उम्र हुई है शादी की। पढ़ाई भी पूर्ण हुई है। नौकरी आज या कल लग जाएगी। कब करनी है उसकी शादी ?"

"कुछ महा के पश्चात गांव के तरफ आनेवाला है वह। पूछेंगे उससे दोनों मिलकर।"

यश ने हिंदी विषय में एम.ए.,एम.फिल्, नेट,सेट,पी-एच.डी आदि तक की पढ़ाई की थी। सहायक प्राध्यापक बनना उसका सपना था। किंतु पैसा और पहचान दोनों घटक उसके पास नहीं थे। मतलब उसका सहायक प्राध्यापक बनना निन्यानवे प्रतिशत न के बराबर था। मां-बाप को भी वहक्ष बता नहीं सकता था। वह मां – बाप को मानसिक तनाव में नहीं डालना चाहता था। इसलिए उसने दूसरा कोई काम करने का मन में ठान लिया था। घर आने तक ऐसी अनेक समस्या उसको सता रही थी।

यश गांव में आया। वह मोहल्ले में आते दिखाई दिया कि मां-बाप उसकी हाथ की बॅग लेने हेतु जल्द गए। चहरे पर मां ने प्रेम से हाथ घूमाया। तुरंत तीनों घर के अंदर गए। कुछक्ष समय के पश्चात पिताजी ने अभिमान से कहा, “यश साहब, मैं बहुत खुश हूं। तू प्राध्यापक बना, इसका मुझे गर्व है। गांव में तेरी वजह से मुझे बहुत इज्जत मिल रही है।”

“ पिताजी,बना नहीं हूं।शायद बन सकता हूं।” मां -बाप को धीर देने हेतु कहा। किंतु अंदर से बहुत टूटा था।

“ बेटा,तुमने बहुत मेहनत की है।जरूर साहब बनेगा तू।” उतने में ख़ुशी के आंसू निकल पढ़े।

कुछ ही क्षण में मां ने कहा, “एक दिन में ही सब बातें करनी है क्या बाप-बेटे को ? पहले खाना खाओं।”

“जी। चलिए मां जी।”

वर्ष बीतते गए।किंतु परिस्थिति वैसी ही थी बिकट।कालांतर से उससे भी बत्तर परिस्थिति हुई। मां – बाप क्षकी उम्र हुई थी। यानी बुढ़ापा आया था। बुढ़ापे में बुखार परेशान कर रही थी।मेरी जिम्मेदारी बढ़ी थी। मैंने अब सहायक प्राध्यापक बनने का सपना छोड़ दिया था। छोड़ा नहीं, व्यवस्था ने छोड़ने के लिए मजबूर किया था।मैंने अब गांव में ही कुछ काम करके मां-बाप के साथ रहने का ठान लिया था। एक दिन मां कहने लगी, “यश,मेरी उम्र हुई है।मेरा और पिताजी का कोई भरोसा नहीं है। तू मेरे आंखों के सामने शादी कर। तुझे कोई भी व्यक्ति लड़की देगा। क्योंकि तू शिक्षित है।आज न कल तूझे नौकरी मिलने ही वाली है।”

“करता हूं। देख लो लड़की। मन में अनेक प्रश्न थे, किंतु मां -बाप को बता नहीं पाया। एक ही प्रश्न निरंतर सताता था,करें तो क्या करें ?”

कुछ ही दिनों में एक स्थल रिश्तेदारों ने मेरे लिए लाया। लड़की करीब घर की थी।उसे पांच बहन थी। उनमें सबसे बढ़ी वही थी,यानी ‘प्रेरणा’ थी। वह पढ़ाई में हुशार थी। उसने एम.कॉम की उपाधि हासिल की थी,हरदिन महाविद्यालय में

जाकर।आगे की पढ़ाई गरीबी के कारण पूरी नहीं कर पाई। पिताजी उसकी शादी करना चाहते थे। जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते थे।

सुबह-सुबह पिताजी के फोन की रिंग बजी।फोन उठाने के पश्चात उधर से आवाज आई, "हैलो, सुखदेव जी बोल रहे है।"

"हां।आप कौन?""आपका रिश्तेदार समझो।"

"रिश्तेदार तो बहुत है। आपका शुभ नाम।"

"चांगदेव।आपके करीबी दोस्त से आपका मोबाईल नंबर लिया था।"

"किस लिए ?"

"आपका बेटा बहुत पढ़-लिखा है। मैंने सुना है कि आप उसके शादी के संदर्भ में सोच रहे है। मेरी बेटी भी पढ़ी लिखी है। मुझे दौलत नहीं, निर्व्यसनी लड़का चाहिए। इसलिए मैंने मोबाईल नंबर लिया था। और आपको खुद मैंने फोन लगाया।"

"जी।अब मुझे याद आया। मैंने ही कहा था मेरे दोस्त को, मेरे बेटे को लड़की देखने के लिए। लड़का देखने हेतु आप कब आ सकते हैं ?"

"आप बताईए।"

"कभी भी आईए।सिर्फ पूर्व सूचना दीजिए।"

"जी। आने के एक दिन पहले बताता हूं। अब मैं फोन रखता हूं। मिलते हैं जल्द से।"

समय बितता जा रहा था। पिताजी की तबीयत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। क्या करें,कुछ समझ नहीं आ रहा था। सोच में मैं डूबा ही था किक्ष पिताजी के फोन की घंटी बजी। नया मोबाईल नंबर दिखाई दिया। मैंने फोन उठाया। सामने से आवाज आई, "हम कल आ रहे है,आपका घर देखने। पिताजी को बता दीजिए।"

"हां,कहकर मैंने फोन रख दिया।"

तुरंत पिताजी ने पूछा, "यश,किनका फोन था ?"

"लड़की वाले आ रहे है,कल अपने घर।"इतना कहकर यश घर से बाहर निकल पड़ा।

घर में ख़ुशी का माहौल था। मां-पिताजी बहुत ख़ुश थे। उनका शारीरिक दर्द जैसे कायम का निकल गया था। घर का सामान इधर-उधर रखते -रखते सुबह हुई। सुबह नौ बजे लड़की वाले की मोटार गाड़ी मौहल्ले में आती हुई दिखाई दी। घर के सब सदस्य बाहर आकर खड़े हुए। मोटार गाड़ी में दस व्यक्ति थे। सभी लोगों को पिताजी अंदर लेकर गए। चाय-पानी हुई। कुछ समय के पश्चात उनमें से एक व्यक्ति धीरे आवाज में बाजू के व्यक्ति को कहने लगा, "लड़के को ठीक ठाक घर भी नहीं है। लड़की इस घर में कैसे दी जाए ?"

बाजू के व्यक्ति ने इशारों में कहा, "चुब बैठ। बग -बग मत कर।"

कुछ समय के पश्चात आए हुए सभी लोग

भोजन करने हेतु बैठ गए। बीच- बीच में कुछ लोग बाहर जा रहे थे। आपस में धीरे आवाज़ में चर्चा कर रहे थे। यह सब यश देख रहा था। किंतु किसी को कुछ नहीं बोला। भोजन होने के पश्चात सुखदेव ने लड़की के बाप से पूछा, " आपको हमरा लड़का पसंद है ?"

"लड़का उच्च शिक्षित है। स्वभाव शांत है। मुझे लड़का पसंद है। घर से मुझे कोई लेना देना नहीं है। मैं मेरी बेटी की राय लेना चाहता हूं। क्योंकि ज़िंदगी लड़के के साथ उसे जीनी है।""लड़के का फोटो फोन पर भेज दीजिए, लड़की को देखने हेतु। हमरा लड़का आपके लड़की को पसंद आया तो आज ही शादी करवाते है।"

"जी। बिल्कुल। मुझे कोई दिक्कत नहीं है।"

तुरंत लड़की को फोटो भेजा गया। लोगों में चर्चा हो रही थी अच्छी-बुरी।समय बितता गया। एक घंटे के पश्चात दूबारा लड़की के पिताजी ने लड़की को फोन किया। उसने जल्द से फोन उठाया और शर्माते हुए कहा, " पिताजी, आपको लड़का पसंद है तो मुझे भी है।"

"क्रांति,तेरी खुशी में मेरी खुशी है। तुझे जो लगता है निःसंकोच भाव से बता। क्योंकि तुझे ज़िंदगी उसके साथ जीनी है,मुझे नहीं।"

"मुझे लड़का पसंद है। मुझे संपत्ति नहीं,लड़का शिक्षित,निर्व्यसनी,समझदार चाहिए। वह सब गुण उसमें है।अंतिम निर्णय आप लीजिए।"

"क्रांति,मुझे भी रिश्ता पसंद है। लड़के के पिताजी कह रहे थे कि शादी आज ही करवाते है। इसमें दोनों परिवार को खर्चा ज़्यादा नहीं होगा। मैं तेरे चाचा को भेजता हूं,तुझे लाने के लिए।"

"जी, पिताजी।"

दोनों परिवार तैयारियां को लग गए। तैयारी करते-करते शाम के सात बजे। लड़की आते ही तुरंत शादी संपन्न हुई। सभी ओर खुशी छाई हुई थी। मां-पिताजी बहुत खुश नज़र आ रहे थे। सब शादी की रश्म होने के पश्चात लड़की के रिश्तेदार गांव के तरफ चले गए।

देखते-देखते शादी को पांच वर्ष पूर्ण हुए। यश और क्रांति को 'आशा' नाम की सुंदर बेटी हुई। घरवाले सब खुश थे। गांव में ही यश काम करके परिवार का गुजारा कर रहा था।यश और क्रांति का जीवन आनंदी गुजर रहा था।यश के मन में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन हुआ था। दोनों समाधानी थे। आगे चलकर कुछ व्यवसाय करने के संदर्भ में दोनों मन ही मन सोच रहे थे।

रात के ग्यारह बज चुके थे। यश को नींद नहीं आ रही थी।उसके अनेक कारण थे।नौकरी नहीं है। खुद का कोई व्यवसाय नहीं है।कुछ तो करना पड़ेगा। अब जिम्मेदारी भी बढ़ी है।मेरे शिक्षा के भरोसे क्रांति ने मुझसे शादी की है।

उसे कभी भी दुखाना नहीं है मुझे।उसके विश्वास को पात्र होना है जल्द से।

ऐसे अनेक विचार, प्रश्न मन में आ रहे थे।उसी समय मां अचानक जोर चिल्लाई।और घबराते स्वर में कहने लगी, "यश,जल्द से इधर आ। तेरे पिताजी ऐसा क्यों कर रहे है ? इसके पहले तो कभी ऐसा उन्होंने नहीं किया। मुझे बहुत डर लग रहा है।"

यश डरा हुआ था। वह दौड़ते हुए आया। पहले पिताजी को देखा। तुरंत पूछने लगा, "क्या हुआ पिताजी ? डरो मत! मैं हूं आपके साथ। अस्पताल चलते हैं जल्द से।"

रात के बारह बजे अस्पताल की ओर यश निकल पड़ा।जेब में,फोन पे पर कुछ भी पैसे नहीं थे। रात्रि के दो बजे मोटार गाड़ी सरकारी अस्पताल के सामने खड़ी हुई।अस्पताल में कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं था। यश ने तुरंत ड्राइवर को कहकर मोटार गाड़ी निजी अस्पताल की ओर लेने के लिए कहा। कुछ ही समय में मोटार गाड़ी निजी अस्पताल में पहुंची। पिताजी को एडमिट किया गया। कुछ ही समय में अस्पताल के कॅश काउंटर के व्यक्ति ने पांच लाख क्षरुपए तुरंत भरने के लिए कहां। क्योंकि जल्द से पिताजी का ऑपरेशन करना था। उनके ब्लॉकेज बंद हो रहे थे। यश को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने तुरंत गांव के साहूकार को फोन किया। कुछ समय बाद उसने फोन उठाया। धीरे आवाज में कहने लगा, "हैलो,कौन है ?"

"यश हूं। सुखदेव का बेटा।"

"जी,पहचाना।बोलो क्या काम है ? इतने रात को फोन क्यूं किया ?"

"शेठजी,मुझे पैसे चाहिए।"

"कितने।"

"पांच लाख।"

"मिल जाएंगे। किंतु ब्याज से। पांच लाख को प्रति माह पच्चीस हजार रूपए लगेगा ब्याज।"

"जी,शेठजी। मुझे शर्त मंजूर है। जल्द से पैसे किसी व्यक्ति के पास भेज दीजिए शेठजी।"

रात्रि को ही पांच लाख रुपए अस्पताल में जमा किए। सुबह-सुबह ऑपरेशन हुआ। किंतु पिताजी नहीं रहे। देरी के वजह से ऑपरेशन असफल हुआ।पैसे गए।पिताजी चल बसे। यश बहुत रोने लगा। उसे पुराने दिन याद आ रहे थे।पिताजी ने उसके लिए ज़िंदगी भर कितनी यातना सही,यह सब उसे याद आ रहा था। वह जोर-जोर से रोने लगा था। मन को हल्का कर रहा था रो कर। कुछ समय पश्चात लाश लेकर मोटार गाड़ी गांव के तरफ निकल पड़ी। मोटार गाड़ी गांव में पहुंची।घर के सामने खड़ी हुई। गाड़ी में सुखदेव की लाश देखकर प्रेरणा,क्रांति, बहुत रोने लगी। गांव क्षके बुजुर्ग लोगों ने समझाने के बाद भी प्रेरणा शांत

बैठ नहीं पा रही थी।उसे पुरानी यादें याद आ रही थी। प्रेरणा रोते-रोते कहने लगी, "अब मैं जीवित रहकर क्या करूं? आपने तो अंतिम सांस तक साथ देने का वादा किया था,किंतु बीच में साथ क्यों छोड़ी? परिस्थिति से आप निरंतर संघर्ष करते रहे। कभी नहीं हारे। फिर मृत्यु से क्यों संघर्ष नहीं किया ? मृत्यु के सामने क्यों हारे? ऐसे अनेक प्रश्न पूछते हुए वह रोती रही।"

यश निःशब्द हुआ था। रो भी नहीं पा रहा था।जैसे कि वह कोमा में जा चुका था। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसका आधार कायम का टूट चुका था। कुछ समय के पश्चात अंत्यविधि कार्यक्रम संपन्न हुआ।आए हुए रिश्तेदार भी अपने-अपने गांव जाने लगे। कुछ समय के पश्चात सब गए।

पिताजी के देहांत को पांच माह पूर्ण हुए। समय कैसे गुजरा,पता तक नहीं चला। समय के साथ सब दुख भूलते गए। किंतु प्रेरणा दुःख में ही रहती थी।वह ज़िंदगी भर दुःख भूल नहीं पाई। वह सोच में ही डूबी रहती थी,निरंतर।एक दिन रात्रि के दस बजे शेठजी मौहल्ले में आए। रास्ते से ही जोर से आवाज दी, "यश घर पर है।"

आवाज सुनते ही यश तुरंत घर के बाहर आया। और कहने लगा, "शेठजी,घर आईए।चाय पीते है।"

"मुझे चाय नहीं, मेरे पैसे चाहिए। वह भी ब्याज के साथ।"

"शेठजी,मुझे कुछ दिनों की मोहलत दीजिए।मैं आपके पैसे ब्याज के साथ लौटाता हूं।"

"कितने दिनों की मोहलत चाहिए ?"

"एक माह।"

"एक माह के पश्चात मैं एक दिन भी नहीं रूकूंगा। तुझे पता है न कितने पैसे देने है।"

" हां,पता है।ब्याज को मिलाकर छह लाख पच्चीस हज़ार रूपए।"

"व्यवहार के बढ़े पक्के हो। चलता हूं।आता हूं एक माह के पश्चात।"

यश घर में वापिस आ गया। मां बहुत चिंतित दिख रही थी। यह व्यवहार मां को अब तक मालूम नहीं था। यश किसी को कुछ बोले बिना रूम में चला गया। चारपाई पर शरीर को झोंक दिया। पीछे-पीछे क्रांति आई। चारपाई पर बैठ गई। कुछ क्षण के पश्चात कहने लगी, "यश,आप टेंशन मत लीजिए। रास्ता निकलेगा कोई न कोई।"

"रास्ता निकलेगा कैसे ? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"मैं आपको सुझाव दूं।"

" क्या सुझाव है ? जल्द से बताईए।"

"क्रांति,आप पागल तो नहीं हुई हो। यह सुझाव मुझे मंजूर नहीं है। आपके पिताजी क्या कहेंगे? उन्होंने मुझ पर भरोसा करके आपकी शादी की है। मैं आपको सुख तो नहीं दे पा रहा हूं। भला दुख क्यों दूं ?"

"ऐसा मत बोलिए आप। हमे सिर्फ़ दो,तीन वर्ष गन्ना काटने हेतु जाना है बस्स। पैसे कटते है दो, तीन वर्ष में। गन्ना काटने हेतु लोगों को ले जाने वाले मुखिया से जल्द से मिलिए आप।और एडवांस पैसे लेकर आईए।"

" यह रास्ता मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। हम दूसरा रास्ता देखेंगे।"

"मैंने रास्ता निकाला है,आपने नहीं। इसलिए आप बुरा मत मानना। जल्द से पैसे लाकर शेठजी को दीजिए।"

दो-तीन दिन गुजर गए। मैं इच्छा न होते हुए भी गन्ना काटने हेतु लोगों को ले जाने वाले मुखिया के पास गया। सात लाख रुपए मांगे। उसने तुरंत दिए। सिर्फ़ इतना कहा कि आपको पैसे कटने तक गन्ना काटने हेतु आना पड़ेगा। मैंने तुरंत कहां कि मुझे मंजूर है।और मैं घर के तरफ निकल पड़ा। रास्ते में ही शेठजी मिले। मुझे देखकर शेठजी ने कहा, "यश,तुझे दी हुई मुदत खत्म हुई। मुझे पैसे चाहिए। वह भी पुरे, ब्याज के साथ।"

"देता हूं।घर चलिए।"

"घर नहीं।यही दो। इसमें डरने की क्या बात है।यह कहां चोरी का पैसा है।मेहनत का पैसा है। पैसा लेकर शेठजी निकल पड़े।"

यश घर के तरफ निकल पड़ा। विचार में चलते-चलते घर कब आया,पता नहीं चला। मां बाहर ही बैठी थी। यश का उदास चेहरा देखकर मां कहने लगी, "यश,टेंशन मत लो। मैं हूं आपके साथ। बुरा समय निकल जाएगा।"

" मां,आप और क्रांति है,इसलिए मैं हूं। नहीं तो मैं कभी का मर..."

"ऐसे अपशकुन शब्द मुंह से मत निकाल। तुझे कुछ हुआ तो मैं,क्रांति और बिटिया आशा कैसे जिएंगे?"

"मैं आप सब के खातिर जीऊंगा मां। खैर,मां मुझे आपसे एक बात कहनी थी।"

"हां,बता न यश।"

"मैं इस वर्ष गन्ना काटने के लिए जा रहा हूं।"

"यश,यह काम बहुत कठीन है।साथ ही स्त्री के तरफ देखने की प्रवृत्ति खराब है कुछेक खेती मालक और ड्राइवर की।यह चित्र मैंने बहुत नज़दीक से देखा है।यह काम छोड़कर तू कुछ भी कर।"

"मेरे पास दूसरा रास्ता नहीं है। मुझे जाना ही पड़ेगा। मैंने सात लाख रुपए अडवांस लिए है,

शेठजी के पैसे देने हेतु। कल संपूर्ण पैसे भी दिए मैंने। किंतु मुझे मन ही मन बहुत दुख हो रहा है कि मेरे कारण क्रांति की परेशानी होगी।""मेरे खातिर तुझे बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ रही है,मुझे माफ करना बेटा।"

"मां,ऐसा आप क्यों बोल रही है ? मेरा दायित्व है यह।आप टेंशन मत लो। परिस्थिति बदल जाएंगी। मैं बाहर जाकर आता हूं।"

मैं रास्ते से जा रहा था कि सामने से गन्ना काटने हेतु लोगों को ले जाने वाला मुखिया दिखाई दिया। उसने बढ़े आवाज में कहा,"यश, हमे कल रात को निकलना है गन्ना काटने के लिए। इस वर्ष दस जोड़ी है,एक ट्रैक्टर के साथ। साथ में धान लेना मत भूलना। इस कारणवश परेशानी नहीं होगी बाद में।"

"जी।"

"और क्या लेना है ?"

"थोड़ा बहुत पारिवारिक साहित्य।साथ ही महत्वपूर्ण बात काम करने की इच्छा।"

"जी। करता हूं तैयारी। मिलते है रात को।"

बाहर से घर आते ही मैंने क्रांति से कहा, "हमे रात को निकलना है,गन्ना काटने के व्यवसाय पर। तैयारी करनी होगी।किंतु मां,आशा बिटिया की हम जाने के पश्चात क्या अवस्था होगी। यह चिंता बहुत सता रही है मुझे।उन्हें घर छोड़कर जाना बहुत बुरा लग रहा है।"

"कुछेक माह की बात है। जल्द से समय निकल जाएगा। हम उनकी व्यवस्था करके जाएंगे।"

"आशा हमरी एकलोती बेटी है।मेरा सब कुछ है वह।उसे मैं पहली बार छोड़कर जा रहा हूं। उसके पढ़ाई का क्या होगा ?"

"उसका टेंशन मत लो। मैंने उसका नाम दर्ज़ किया है।"

"कहां ?"

"जिन बच्चों के मां -बाप गन्ना काटने हेतु बाहर राज्य में जाते हैं,उनके बच्चों के शिक्षा हेतु सरकार की कुछ संस्था आर्थिक सहायता करती है। बच्चों को स्कूल के कपड़े,किराना सामान संस्था से निरंतर मिलता है।उन संस्था में मैंने आशा का नाम दर्ज़ किया है।"

"सही में आर्थिक सहायता,सामान मिलेगा। इसके पहले मैंने देखा है कि यह योजना सिर्फ़ कागज़ पर चलती है। थोड़ा पैसा मिलता है, उनमें से भी कुछ पैसा बहुत से क्षकर्मचारी हड़प करते हैं। हाथ में ज़्यादा कुछ नहीं आता।"

"आप नकारात्मक मत सोचना। हमरे साथ ऐसा कुछ नहीं होगा। अच्छा ही होगा।"

"अच्छा ही हो। साथ ही मुझे मां की चिंता भी हो रही है। उनकी उम्र हुई है। उन्हें शरीर साथ नहीं दे रहा है। उन्हें बुखार आई तो अस्पताल लेकर कौन

जाएगा ? उनकी देखभाल कौन करेगा ? ऐसे अनंत सवाल मन में आ रहे है।”

“आपकी लाड़ली बेटी आशा सब कुछ करेगी।आप चिंता मत करो। वह बहुत समझदार है,आप जैसी।”“हां,वह तो है। बहुत चर्चा हुई। जल्द सामान भरो ।समय कम है हमरे पास।”

“भर्ती हूं।आप मां से बातचीत कीजिए। उन्हें अच्छा लगेगा।”

समय निकल गया। ट्रैक्टर घर के सामने आकर खड़ा हुआ। ट्रैक्टर साथ के दूसरे लोगों को लेकर आया था। हम ही बाकी थे। लोगों ने सामान भरने में मदत की। सब सामान भरना हुआ। मैं बहुत दुखी था। किंतु रो नहीं पाया। मां और बिटिया बहुत भावनिक हुई,फिर भी नहीं रो पाई। लेकिन दुख तो सभी के दिल में था। ट्रैक्टर निकल पड़ा संघर्ष के राह पर। बाद में यश बहुत रोया।दिल को हल्का किया। मेरे जैसी अनेक स्त्रिया रो रहीं थी। दुख में, विचार में समय कैसे कटा,समझ नहीं आया।हमरा ठिकान आया है।मुखिया कहने लगा कि अपना- अपना सामान ट्रैक्टर से उतारो।

यश सामान उतारने लगा। क्रांति मदत कर रही थी। हमे कारखाने से ताड़पत्री दी गई। हमने ताड़पत्री से झोपड़ी बना ली। सब व्यवस्था करते- करते रात के आठ बजे। साथ में लाया हुआ खाना खाया।और हम सो गए।

सुबह चार बजे से शोर शुरू हुआ।यानी गन्ना तोड़ने हेतु जाने की तैयारी। जल्द से स्त्रियां स्नान करने लगी, क्यूंकि ठीक व्यवस्था स्त्री हेतु नहीं थी। पुरुष उठने से पहले सब स्त्रियां स्नान करती थी। एखाद स्त्री को देर हुई तो उस दिन स्नान वह नहीं करती थी।सुबह पांच बजे सब खेत में पहुंचे,गन्ना काटने हेतु। जाड़े के दिन होने के बावजूद भी सुबह उठना पड़ता था। क्योंकि सब की मजबूरी थी।

गन्ना काटना शुरू हुआ।यश और क्रांति का पहला दिन था। क्रांति की परेशानी हो रही थी। मैं देख नहीं पा रहा था। मैं गन्ना काटते- काटते क्रांति को गन्ना बांधने में मदत करता था। यश ने व्याकुल होकर कहा, “क्रांति,आप घर जाईए। मैं अकेला करता हूं काम। पांच -छह वर्ष लगातार गन्ना काटने हेतु मैं आया तो पूरे पैसे कट जाएंगे। आपकी परेशानी मुझसे देखी नहीं जाती।”

“परेशानी कुछ नहीं। आपके साथ मुझे अच्छा लगता है। कुछ दिन में पड़ जाएगी आदत।”

“आप कहां मुझे बोलने में और काम में जीतने देगी। करता हूं मैं अपना काम।”

सब लोग काम में व्यस्त थे। कोई किसी के तरफ ध्यान नहीं दे रहा था। उतने में खेत का मालिक मेरे पीछे आकर खड़ा हुआ। थोड़ी देर बाद धीरे से उसने कहा, “क्रांति,आप पहली बार गन्ना

काटने हेतु आई है शायद।”

“हां,सही कहना आपने। क्या हुआ ? कुछ गलती हुई।”

“ऐसे ही पूछा था।कोई ग़लती नहीं हुई। आप बहुत सुंदर है दिखने में।”

“तो क्या हुआ ? आपको दिक्कत है।”

“नहीं,ऐसा कुछ नहीं। मुझे आपसे कुछ बोलना था।”

“क्या बोलना है ?”

“मेरे साथ एक रात के लिए चलेगी। तू जितना पैसा बोलेगी,मैं देने के लिए तैयार हूं।”

“तुरंत जबरन जोर से कान के नीचे चप्पल मारी।तेरी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की। यहां से निकल जा। तुन्हें मुझे वेश्या समझा क्या ? मैं गरीब हूं,यह सही है,किंतु मैं चरित्रवान, स्वाभिमानी हूं।” चेहरा लाल बबूला हुआ था।

क्रांति बहुत नाराज़ थी। उसे बहुत मानसिक परेशानी हो रहा थी। किंतु वह घटित घटना किसी को बताना नहीं चाहती थी। रात्रि के सात बज चुके थे। सभी अपने ठिकाने के तरफ़ निकल पड़े। वहां जाने के पश्चात क्रांति सब्जी,रोटी झोपड़ी के बाहर बना रही थी।उसके बाजू में दूसरी औरतें भी अपने काम में व्यस्त थी। रात्रि को बहुत से स्त्री के पति शराब पीकर आए थे। गालियां दे रहे थे। कुछ पत्नी को पीट भी रहे थे।स्त्री कुछ भी कर नहीं पा रही थी। सिर्फ़ अन्याय सह रही थी। इतने में यश ने कहा, “क्रांति,आप नाराज़ दिख रही है,क्या हुआ ?”

“कुछ नहीं। काम के वजह से शायद बोर हुई हूं।”

“सही में। दूसरा कुछ कारण तो नहीं न।आप कितना भी झूठ बोलो,आंखें सब बता रही है हक़ीक़त।”

“मुझ पर विश्वास नहीं है आपका।”

“मुझसे भी ज़्यादा है। मुझे भूख लगी है।तुझे भी लगी होगी। मैं कुछ मदत करता हूं ख़ाना बनाने में। जल्द भोजन करेंगे साथ में।”

“कुछ मिनट रूकिए। हो गया है सब।”

यश और क्रांति दोनों ने खाना खाया। गप्पी मारी। समय कैसे बिता पता नहीं चला।रात्रि के दस बजे थे। थोड़ी देर बाद दोनों को नींद लग गई। रात्रि के तीन बजे जोर से आवाज सुनाई दी,“सब जल्द से उठिए,कटा हुआ गन्ना ट्रैक्टर के ट्रोली में भरना है। मुझे जल्द से गन्ना लेकर जाना है कारखाने पर।” इतना कहकर ट्रैक्टर ड्राइवर शांत बैठ गया।

सब लोग उठे। ओर कटे हुए गन्ने के तरफ़ निकल पड़े। कुछ ही समय में वहां जाकर खड़े हुए। ट्रैक्टर भरना शुरू हुआ।दो-तीन पुरुष ट्रैक्टर के ट्रोली में गन्ना अच्छा रच रहे थे। महिला गन्ने की मोली लेकर आ रही थी। खाली बैलगाड़ी में चढ़कर ट्रोली में गन्ने की मोली दे रही थी। सभी का में

व्यस्त थे।ड्राइवर गन्ना जहां काटा है वहां जाकर बैठा था। कुछेक महिला को गन्ने की मोली उठाकर देता था। उसने जानबूझकर क्रांति के कमरक्ष को स्पर्श किया। और कहा, "तू बहुत चिकनी है। मुझे संभोग करना है तेरे साथ।थोड़ी देर के लिए कुछ बहाना करके आ सकती है मेरे साथ। मैं तुझे तू जो मांगूंगी वह दूंगा।"

"तुने मुझे रास्ते पर पड़ी स्त्री समझा क्या ? स्त्री तरफ तुझ जैसे पुरुष भोग के दृष्टि से क्यों देखते है ? यह मुझे अब तक समझ नहीं आया।तुझे मां,बहन नहीं है क्या साले ? चल निकल यहां से कुत्ते। तू और कुछ समय यहां ठहरा तो मैं जान से मारूंगी तुझे।"

ड्राइवर कुत्ते की तरह भागा।और ट्रैक्टर में जाकर बैठ गया।ट्रैक्टर की ट्रोली भरने के बाद भी नीचे नहीं उतरा।किसी स्त्री के तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देखा। सीधा ट्रैक्टर लेकर चला गया।

देखते-देखते समय बिताता गया। गन्ना काटने हेतु आए छह माह पूर्ण हुए। गन्ना काटना खत्म हुआ। बहुत लोगों के लिए हुए पैसे कट गए।दो लाख रुपए का हर एक जोड़ी का काम हुआ। सभी ने अच्छा काम किया था,इसी वजह से कारखाने से घर जाते समय बोनस भी मिला। सब को अच्छे -बुरे अनुभव आए।सब लोग ट्रैक्टर की ट्रोली में सामन डालने लगे। सभी को घर जाने की आस लगी थी। सभी बहुत खुश थे। क्योंकि वह परिवार से जल्द मिलने वाले थे।सब लोग आपस में चर्चा कर रहे थे, छह माह के काम कार्य पर।अनुभव पर। क्रांति भी बहुत क्षखुश थी, क्योंकि वह आशा बिटिया,सासु मां को बहुत दिनों के बाद देखने वाली थी। किंतु उसके मन में बहुत मानसिक वेदना थी। वह उसे बेचन कर रही थी।मन हल्का करना उसे आवश्यक लग रहा था।वह अंदर ही अंदर मन को खा रही थी। उसने तय किया कि मैं यश को घटित दोनों घटना बताऊंगी। उसने धीरे स्वर में नरवस होकर कहा, "यश,मैंने पहली बार आपको कुछ घटित घटना नहीं बताई। इसका मुझे बुरा लग रहा है।"

"क्या हुआ? जल्द से बताईए।"

"छह माह में मेरे साथ दो घटनाएं घटी। वह बहुत बुरी थी। मानसिक पीड़ादायक भी थी।स्त्री तरफ़ देखने की बहुत से पुरुष की मानसिकता वर्तमान में भी क्यों नहीं बदल रही ? मेरे जिस्म से खेलने की कोशिश की गई,वह भी दो बार। शरीर को नोचने का प्रयास किया गया। मैं डरी नहीं,हारी भी नहीं,डटकर विरोध किया। किंतु क्षवर्तमान बहुत सी स्त्रियां ऐसे हैवानों की शिकार बन रही है। वे मजबुरी का फायदा उठा रहे हैं। इन परिस्थिति में बदलाव होना जरूरी है।"

"पुरूष के नीच मानसिकता में बदलाव जाने हेतुआप जैसी क्रांतिकारी विचार की स्त्रियां निर्माण हो। पुरूष के नीच मानसिकता का

खुलकर विरोध करें। समय आने पर उन्हें, उनके नीच विचार को भी मार दे। तभी बदलाव होगा। इसके पश्चात क्रांति हम कभी गन्ना काटने नहीं आएंगे। जो कुछ पैसे मुखिया के मेरे तरफ़ रहे है,वह मैं उसे कहां से भी लाकर दूंगा।"

इस तरह हर स्त्री कोई न कोई बुरा अनुभव बता रही थी। सभी की चर्चा आपस में शुरू ही थी।गांव नज़दीक आया था।पांच ही किलोमीटर गांव दूर था। इतने में अचानक ट्रैक्टर ट्रोली सहीत पूल से गोदावरी नदी में गीर पड़ा। शायद ड्राइवर के शराब के कारण। उस दुर्घटना में यश, क्रांति और कुछ छोटे बच्चों की मृत्यु हुई। सब लोग ज़ोर-ज़ोर रोने लगे। यह वार्ता गांव में हवा की तरह जल्द से फ़ैल गई। गांव के किसी एक बुजुर्ग व्यक्ति ने यश के मां को दुर्घटना की खबर दी।आशा और प्रेरणा बहुत रोने लगी। गांव के लोग इकट्ठा हुए। उन्हें समझाने की कोशिश करने लगे,तब भी प्रेरणा रोती ही रही।उतने में रोते-रोते आशा बिटिया कहती है, "दादी,रो मत। मैं हूं न। मैं बहुत पढूंगी, पिताजी की तरह। आपकी देखभाल करूंगी। पिताजी,मां का संघर्ष मुझे प्रोत्साहन देता रहेगा।" इतना कहकर वह ज़िंदगी के संघर्ष रास्ते पर अकेली निकल पड़ी।

लेखक परिचय-

नाम:- रामेश्वर वाढेकर 'संघर्षशील'

जन्म:- 20 मई,1991

शिक्षा:-एम.ए.(हिंदी),एम.ए.(मराठी), एम.फिल्.,सेट (कर्नाटक), सेट,नेट,अनुवाद पदविका,बी.एड्.,पी-एच.डी.(कार्यरत) आदि।

लेखन:- चरित्रहीन,दलाल,सी.एच.बी.इंटरव्यू,

लड़का ही क्यों?, अकेलापन, षड़यंत्र, शहीद, अग्निदाह,चौख़ट, धार्मिकता की शिकार, हैसियत,सी.एच.बी.सहायक प्राध्यापक आदि कहानियां विभिन्न पत्रिका में प्रकाशित।

भाषा,विवरण, शोध दिशा, अक्षरवार्ता, गगनांचल,युवा हिन्दुस्तानी ज़बान, साहित्य यात्रा,विचार वीथी,डिप्रेस्ड एक्सप्रेस,शैलसूत्र,नागफनी,विश्व स्नेह समाज आदि पत्रिकाओं में लेख तथा संगोष्ठियों में प्रपत्र प्रस्तुति।